**B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA**

**(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)**

**BA DEGREE-1**

**HISTORY HONS.**

**PAPER-1**

**UNIT-2(II)**

**DEPARTMENT OF HISTORY**

**PANKAJ KUMAR MISHRA**

**DATE-03/10/2020**

TOPIC:- छठी सदी ई०पू० का काल (बुद्धकाल/ महाजनपद काल)

PERIOD OF SIXTH CENTURY B.C

PART-2

Scanned with CamScanner

# छठी सदी ई० पूर्व का काल, भाग-2
## (बुद्ध काल/महाजनपद काल)

### बुद्ध काल की राजनीतिक दशा

इस काल में भारत अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था। इन राज्यों में शासन के दो रूप थे- राजतंत्रात्मक, गणतंत्रात्मक। काशी, वत्स, मगध आदि महाजनपदों में राजतंत्रात्मक व्यवस्था थी जिसके तहत निरंकुश राजा, स्थायी नौकरशाही, स्थायी सेना, नियमित कर प्रणाली, न्याय प्रणाली आदि का विकास हुआ। ऐतरेय ब्राह्मण में राज्य के प्रधान को सम्राट पुकारा गया।

इस काल में गणतंत्रों का भी अस्तित्व था। लिच्छवि, विदेह, शाक्य, मल्ल, कोलिय, पावा के मल्ल मोरिय, कुशीनारा के मल्ल जैसे गणतंत्रों का उल्लेख मिलता है। इनकी शासन व्यवस्था राजतंत्र से अलग थी। राजतंत्र में शासन का प्रधान वंशानुगत राजा था जो निरंकुश होता था जबकि गणतंत्रीय व्यवस्था में निर्वाचित राजा कुलीनों के सहयोग से व उनके नियंत्रण में कार्य करता था। इन गणतंत्रों में नागरिकों के अधिकारों एवं उसकी स्वतंत्रता के सुरक्षा के पूर्ण उपाय किए गए थे। कोई भी शासन इसकी अवहेलना नहीं करता था। अगर निर्वाचित राजा प्रजा के हितों की सुरक्षा नहीं कर सकता था तो उसे बदला भी जा सकता था।

गणतांत्रिक व्यवस्था की कुछ सीमाएँ भी थीं। ये गणतंत्र सही अर्थों में गणतंत्र न होकर कुलीनतंत्र थे जहाँ शासन में जनसाधारण का नहीं बल्कि शासक वर्ग का ही बोलबाला था। अधिकांश गणराज्य छोटे थे उनका क्षेत्र सीमित था। इसलिए वे बड़ी शक्तियों का मुकाबला करने में असमर्थ रहे। फलतः राजतंत्रों के विस्तार के चे नतमस्तक हो गए और साम्राज्यवादी शक्तियों के द्वारा विलीन हो गए।

### बुद्धकालीन आर्थिक दशा

600 B.C की एक प्रमुख विशेषता आर्थिक संपन्नता तथा बड़े नगरों का निर्माण था। वस्तुतः इस काल में लोहे के प्रयोग से कृषि का विस्तार एवं विकास हुआ। अब लौह औजारों के माध्यम से वनों को काटना अधिक सुगम हो गया और इस प्रकार अब जंगल एक विस्तृत कृषि क्षेत्र में परिवर्तित हो गए। दूसरी तरफ जुताई में लोहे के हल का प्रयोग होने से भूमि की उर्वरता बढ़ी। अब वर्ष में दो से तीन फसलें ली जाने लगी और इन सबसे व्यापक कृषि अधिशेष की स्थिति पैदा हुई। इसके परिणामस्वरूप गृहपति जैसे वर्ग की उत्पत्ति हुई। यह गृहपति एक धनवान एवं विस्तृत भू-स्वामी के रूप में जाना जाता था।

कृषि के विस्तार विशेषकर धान की खेती से जनसांख्यिकीय क्रांति संभव हुई। जनसंख्या वृद्धि इस काल में समृद्धि का प्रतीक मानी जाती थी। जनसंख्या से विभिन्न शिल्पों का विकास हुआ। बस्तियों की संख्या में वृद्धि हुई और बाजारों का विकास हुआ था उदय हुआ।

Scanned with CamScanner

इस काल में भारत का व्यापार-वाणिज्य बढ़ा। वस्तुतः व्यापारिक मार्गों का विकास हुआ। यह मार्ग श्रावस्ती से प्रतिष्ठान तथा तक्षशिला से राजगृह एवं राजगृह से कौशांबी एवं उज्जैन आदि क्षेत्रों को एक दूसरे से जोड़ता था। विदेश व्यापार में भी भारत का उत्तर-पश्चिम ईरान आदि देशों से आदान-प्रदान हुआ।

इस काल में मुद्रा प्रणाली का प्रचलन हुआ। ये मुद्राएँ चाँदी की बनी थी एवं आहत मुद्राएँ कहलाती थी। अब विनिमय के रूप में मुद्रा का प्रयोग होने लगा। मुद्रा व्यवस्था ने विनिमय की सुविधा प्रदान करके व्यापार एवं उद्योगों की प्रगति में सहायता दी। इसप्रकार ये सभी प्रवृत्तियाँ द्वितीय नगरीकरण की पृष्ठभूमि करती हैं

Pankaj
03/10/2020

Scanned with CamScanner